डॉ० हरिनारायण दीक्षित की सारस्वत साधना

श्रीनन्दन पाण्डेय

शोधच्छात्र संस्कृत विभाग, तिलक महाविद्यालय, औरैया, उत्तर प्रदेश, भारत

Author Email: srinandanpandey@gmail.com

शोध आलेख सार—डॉ० हरिनारायण दीक्षित अर्वाचीन गीर्वाणभारती के प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय महाकवि हैं। इन्होंने अपनी काव्य लेखनी द्वारा संस्कृत साहित्य की अतुलनीय सेवा की है। आपकी रचनायें राष्ट्रीय एकता को मजबूत करती हैं तथा देश प्रेम को बढ़ाती हैं। इनके काव्य आधुनिक समाज में उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आदि विद्रूपता को उजागर करने एवं उनके निवरणार्थ उपाय बताने में समर्थ हैं। संस्कृत वाङ्गमय में रचित इनकी रचनाएँ सुमार्ग पर चलने के लिए समाज को प्रेरित करती हैं।

संकेत शब्द– महाकाव्य, खण्डकाव्य, संदेशकाव्य, गद्यकाव्य, मुक्तककाव्य, शतककाव्य, नाटक, कथाकाव्य, निबन्ध आदि।

I. परिचय

डॉ० हरिनारायण दीक्षित का जन्म 13 जनवरी 1936 को उत्तर प्रदेश राज्य के जालौन जनपद में स्थित पढ़कुला नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पण्डित रघुवीर सहाय दीक्षित तथा माता का नाम श्रीमती सुदामा देवी था। इनका कर्मक्षेत्र नैनीताल था तथा आप कुमायूँ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्राध्यापक एवं आचार्य पद पर प्रतिष्ठित रहे। **'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'** यह कहावत डॉ० दीक्षित के विषय में अक्षरशः सत्य है। बाल्यकाल से ही अप्रतिम प्रतिभा के धनी डॉ० दीक्षित विद्यालयी शिक्षा की अवधि में भी एक प्रतिभावान् छात्र रहे। भारतीय सांस्कृतिक चेतना एवं नैतिक संस्कारों के प्रति आपका रुझान बाल्यकाल से ही था। यही कारण है कि आपकी काव्य लेखनी संस्कृत साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में चली है। आपने सामाजिक अलगाव, प्रदूषण, धर्मान्धता, भ्रष्टाचार आदि बुराइयों को अपने काव्य के माध्यम से उठाया है।

डॉ० दीक्षित के संस्कृत साहित्य में किये गये योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। डॉ० हरिनारायण दीक्षित एक कुशल प्राध्यापक के साथ–साथ वाग्देवी समुपासक भी रहे हैं। आपने अपने जीवनकाल में कुल इकतीस ग्रन्थों का प्रणयन किया है, जिसमें 27 मौलिक, तीन सम्पादित और एक अनुदित हैं। डॉ० दीक्षित की साहित्य साधना का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

II. महाकाव्य

भीष्मचरितम्– यह कवि का बीस सर्गों में प्रणीत महाकाव्य है। इसमें महाभारत में पितामह नाम से प्रसिद्ध गंगापुत्र (भीष्म) देवव्रत के जीवन चरित्र का जन्म से लेकर महाप्रयाण तक की अनेक द्वन्द्वों से भरे जीवन का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। इस महाकाव्य की शैली वैदर्भी एवं भाषा अत्यन्त सरल है। इस महान् कृति हेतु आपको साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है।

भारतमाता ब्रूते– यह डॉ० दीक्षित का राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत–प्रोत महाकाव्य है। इस ग्रन्थ में भगवान् लक्ष्मीनारायण भारतभूमि के विषय में चिन्तन करते हुए पहले कश्मीर और तत्पश्चात् तीर्थस्थली हरिद्वार भ्रमण हेतु पधारते हैं। अन्त में भारत माता के पुनः अवतार के कारण देवी लक्ष्मी बैकुण्ठ लोक को पुनः गमन करती हैं। यह महाकाव्य बाइस सर्गों में निबद्ध है। डॉ० दीक्षित ने भारत माता के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराईयों जैसे– बलात्कार, अपहरण, हत्या तथा पर्यावरण प्रदूषण आदि पर व्यंग्य किया है।

श्रीग्वल्लदेवचरितम्– डॉ० दीक्षित द्वारा विरचित यह एक महाकाव्य है। उत्तराखण्ड की सभ्यता, सामाजिक, आर्थिक एवम् संस्कृति का सविस्तार वर्णन करता यह महाकाव्य सत्ताइस सर्गों में विभक्त है। डॉ० दीक्षित ने इस ग्रंथ में धूमाकोट नामक नगर के राजा हालराय द्वारा अपनी सात रानियों के बाद आठवीं रानी से विवाह किये जाने और उस रानी से उत्पन्न पुत्र को जल में बहाये जाने की तथा निःसन्तान दम्पत्ति द्वारा उस पुत्र का पालन–पोषण करने तथा उसका नाम ग्वल्ल रखने की कथा का वर्णन किया है। यही बालक आगे चलकर श्री ग्वल्लदेव राजा के रूप में प्रसिद्ध होता है।

राधाचरितम्– डॉ० हरिनारायण दीक्षित विरचित यह भी एक महाकाव्य है जो बीस सर्गों में निबद्ध है। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण की हृदयाह्लादिनी देवी राधा के सम्पूर्ण जीवन चरित्र को अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

श्रीगुरुमहाराजचरितम्– तीस सर्गों में निबद्ध इस महाकाव्य में कवि ने अपने परमपूज्य गुरुदेव श्री विद्याधर सरस्वती के जीवन चरित्र को वर्णित किया है। जो सन् 2016 में दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

III. खण्डकव्य

गुरुकुलकांगड़ीविश्वविद्यालयीयम्– डॉ० दीक्षित ने इस खण्डकाव्य में तीर्थाटन हेतु हरिद्वार पधारे साधुदर्शन से तृप्त–चित्त एक दम्पति द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय देखने की इच्छा तथा उनके द्वारा विश्वविद्यालय भ्रमण का वर्णन दो सौ अढ़तालीस श्लोकों में निबद्ध किया है। दम्पति को वहाँ बगीचे के पास एक नवयुवक से परिचय होता है, जो उन्हें विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण विशेषताओं से अवगत कराता है।

अजमोहभङ्गम्– डॉ० दीक्षित द्वारा रचित यह एक खण्डकाव्य है, इसमें छः सर्ग हैं। इस ग्रन्थ में रघुवंशी राजा अज के अपनी प्रिय पत्नी रानी इन्दुमती की आकस्मिक मृत्यु पर मोहासक्त होकर कर्त्तव्यपथ से च्युत् होने तथा कुलगुरु वशिष्ठ के द्वारा उपदेश दिये जाने पर मोहमुक्त होने की कथा का प्रेरक वर्णन किया गया है।

पशुपक्षिविचिन्तनम्– डॉ० दीक्षित कृत यह खण्डकाव्य पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध उभय भागों में विभक्त है। इस ग्रंथ के पूर्वार्द्ध में मनुष्यों द्वारा मनुष्येतर प्राणियों पर किए जा रहे नृशंसता का वर्णन तथा उन यातनाओं से पीड़ित पशु–पक्षियों द्वारा रक्षा हेतु पुकार किये जाने का वर्णन है और उत्तरार्द्ध भाग में पशु पक्षियों द्वारा राष्ट्रपति को प्रार्थना पत्र भेजे जाने का प्रतीकात्मक वर्णन किया गया है।

IV. सन्देशकाव्य

श्रीहनुमद्दूतम्– डॉ० दीक्षित द्वारा विरचित यह प्रकृत ग्रन्थ, सन्देशकाव्य परम्परा के अन्तर्गत परिगणित एक दूतकाव्य है। इसमें 112 लालित्य युक्त पद्यों में राक्षसराज रावण के अशोक वाटिका में बन्दी बनायी गयी शक्तिस्वरूपा माता सीता का हनुमान् जैसे निपुण दूत के द्वारा अपने पति श्रीराम को भेजे जाने वाले सन्देश का वर्णन किया गया है। सीता की खोज कर, राक्षसों को मारकर और लङ्का को जलाकर जब हनुमान् जी श्री राम के पास वापस लौटने लगते हैं तो सीता जी अपना विरह संदेश राम से सुनाने के लिये हनुमान् से कहती हैं। इस काव्य में भाव–सौरभ और शिल्प–सौन्दर्य का सुन्दर समन्वय है। इस ग्रंथ हेतु इन्हे विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया जा चुका है।

V. कथाकाव्य

निर्वेदनिर्झरिणी– यह डॉ० दीक्षित द्वारा विरचित कथाकाव्य है। इसमें नायक विद्याधर के द्वारा चौदह मार्मिक कथाओं का वर्णन किया गया है। जिनका मुख्य उद्देश्य निर्वेद की सत्यता को स्थापित करना है।

गोपालबन्धुः– भगवद्भक्तों को हृदयाह्लादित करने वाला यह प्रसिद्ध ग्रन्थ डॉ० दीक्षित द्वारा विरचित कथाकाव्य है। इसमें वृन्दावन धाम के समीप स्थित किसी गाँव के एक पिछड़ी जाति के बालक राकेश के चरित्र की झाँकी मिलती है, जो अपने पिता को खो चुका है तथा वह अपनी वृद्ध माता की इकलौती सन्तान है। वह अपनी माता के द्वारा बताये गये गोपाल अर्थात् भगवान् श्रीकृष्ण को अपना बड़ा भाई मानने लगता है। जिसके फलस्वरूप भगवती राधा व श्री कृष्ण को उसके भाई–भाभी के रूप में साथ देना पड़ता है। इसी प्रसंग के आधार पर ग्रन्थ का नामकरण गोपालबन्धु किया गया है।

VI. गद्यकाव्य

श्रीमदप्पयदीक्षितचरितम् – यह डॉ० दीक्षित की मौलिक गद्य रचना है। इसमें डॉ० दीक्षित ने संस्कृत जगत् के महान् साहित्य शास्त्री श्री अप्पय दीक्षित जी के जीवनवृत्त का विस्तर पूर्वक वर्णन किया है। इसमें श्री अप्पय दीक्षित जी के जन्म, नामकरण, गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने, विराट् प्रतिभा का, प्रकाण्ड पाण्डित्य का, राजसम्मान प्राप्त करने, शत्रु पराजय, शरण में आये हुये के प्रति प्रेम भाव का, वंश परम्परा का तथा अपने शिष्यों के प्रति उनके विनम्र प्रेम आदि का अत्यन्त सरल, सरस एवं रुचिकर शैली में वर्णन किया गया है।

VII. निबन्ध

संस्कृतनिबन्धरश्मिः– यह डॉ० दीक्षित द्वारा संस्कृत में लिखित निबन्धों का संग्रह है। इसमें आदर्श निबंध के साथ–साथ, निबंध लेखन में किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, इसकी भी शिक्षा दी गयी है।

संस्कृतनिबन्धावली– डॉ० दीक्षित ने यह पुस्तक आचार्य तथा एम०ए० छात्रों के लाभार्थ लिखी है। इस ग्रन्थ में विविध विषयाधारित पचास से अधिक निबन्धों का संग्रह है।

VIII. नाटक

मेनकाविश्वामित्रम्– यह डॉ० दीक्षित का प्रसिद्ध नाटक है। इसमें आठ अंक हैं। ब्रह्मर्षि विश्वामित्र तथा स्वर्ग सुन्दरी अप्सरा मेनका के दिव्य प्रेम तथा पुत्री शकुन्तला के जन्म–वृत्तान्त का वैदर्भी शैली में सरस वर्णन किया गया है। यह ग्रन्थ एक प्रकार से अभिज्ञानशाकुन्तलम् की पूर्वपीठिका के रूप में लिखा गया है।

वाल्मीकिसम्भवम्– यह डॉ० दीक्षित का पौराणिक नाटक है, जो छः अंक में विभक्त है। इसमें महर्षि वाल्मीकि के प्रारम्भिक जीवन– दस्युरूप रत्नाकर से ब्रह्मर्षि वाल्मीकि होने तक की कथा को विस्तार रूप से वर्णन करते हुये नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया गया है।

IX. शतककाव्य

उपदेशशती– कवि ने व्यंग्यात्मक शैली के इस शतककाव्य में 117 पद्यों द्वारा अन्योक्तियों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों, अत्याचार, अन्याय आदि पर व्यंग्यात्मक शैली में प्रहार किया है। इसमें श्वान, हरिण, काक, श्रृंगाल, सूकर आम्रवृक्ष, करीर, निम्बादि के सन्दर्भों द्वारा नीति युक्त पद्यों की रचना की गयी है।

दुर्जनाचरितम्– डॉ० दीक्षित द्वारा विरचित यह प्रकृत ग्रन्थ शतक–काव्य कोटि का ग्रन्थ है, जिसमे 251 पद्यों में कवि ने दुर्जनों के आचरण की विशिष्टताओं को उजागर किया है। धूर्तता, प्रवञ्चना, कटु एवं मर्मभेदी शब्द बाण आदि के विषय को विस्तार से वर्णित किया गया है। सज्जनों को इनसे बचने को भी उपदेशित किया गया है।

सज्जनाचरितम्– डॉ० दीक्षित प्रणीत यह भी शतककाव्य है। सज्जन प्रशंसा एवं दुर्जन निंदा, काव्य का मूल विषयभाव होता है। डॉ० दीक्षित ने इन दोनों विषयों पर दो शतक ग्रन्थों का प्रणयन किया है। इस ग्रन्थ में भी 251 श्लोकों के अन्तर्गत सज्जनाचरण का वर्णन किया गया है।

X. मुक्तककाव्य

देशोऽयम् कुरुते प्रोन्नतिम्– डॉ० दीक्षित द्वारा रचित इस ग्रन्थ में 109 श्लोक द्वारा राष्ट्रिय समस्याओं को ज्वलन्त रूप में उजागर किया गया है। इस ग्रन्थ द्वारा डॉ० दीक्षित ने पाठकों को यह सन्देश देने का प्रयास किया है कि ''सभी को भारतीय संविधान द्वारा समान अधिकार प्राप्त हैं, इसलिये हमें प्रत्येक भारतवासी के सर्वांगीण विकास एवं उन्नति में पूर्णरूप से सहयोग करना चाहिए।''

मनुजाश्शृणुत गिरं मे– यह डॉ० दीक्षित का एक मुक्तक काव्य है। जिसका स्वरूप उपदेश काव्य का है। कवि ने नीति सुवचनों द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा भ्रष्टाचार आदि से सावधान करने का प्रयत्न किया है। इस ग्रन्थ में कवि के अध्यापक हृदय की छाप यथार्थ रूप में दृष्टिगोचर होती है।

इदमपि शृणुत सखायः– यह एक मुक्तक काव्य है। इसमें विविध नीति–परक पद्यों का संकलन किया गया है।

XI. सम्पादित व अनुवादित

भारतीयकाव्यशास्त्रमीमांसा– डॉ० दीक्षित द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ विभिन्न काव्यशास्त्रीय विद्वानों के द्वारा लिखे गये शोध–लेखों का संकलित स्वरूप है।

पण्डितराजजगन्नाथकाव्यग्रन्थावली– यह काव्यग्रन्थावली सुप्रसिद्ध साहित्यशास्त्री तथा महान् कवि पण्डितराज जगन्नाथ की अखिल उपलब्ध काव्य सम्पदा का अनुदित ग्रन्थ है। डॉ० दीक्षित द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ में पण्डितराज जगन्नाथ की कृतियों– पीयूषलहरी, अमृतलहरी, गंगालहरी, करुणालहरी, अन्योक्तिविलास, आसफविलास, जगदाभरण तथा रसगंगाधर आदि में स्थित पद्यों का तदनुरूप अनुवाद किया गया है।

बुन्देलखण्डी कवि पण्डित राजाराममिश्रकाव्यसंग्रह– यह ग्रन्थ डॉ० दीक्षित द्वारा सम्पादित है। इसमें बुन्देलखण्ड के सुप्रतिष्ठित कवि पण्डित राजाराम मिश्र द्वारा रचित संपूर्ण काव्य संपदा का संकलन एवं सानुवाद सम्पादन दिया गया है।

राष्ट्रियसूक्तिसंग्रहः– डॉ० दीक्षित ने इस संग्रह ग्रन्थ में एक हजार से अधिक राष्ट्रिय भावनाओं से परिपूर्ण संस्कृत सूक्तियों का हिन्दी अनुवाद सहित संग्रह किया है।

XII. शोध ग्रंथ

तिलकमञ्जरी : एक समीक्षात्मक अध्ययन (पी०एच–डी० शोधग्रन्थ)– यह डॉ० दीक्षित का एक शोधप्रबन्ध ग्रन्थ है, जिसे महाकवि ने पी०एच–डी० उपाधि प्राप्ति हेतु प्रस्तुत किया था। प्रकृत ग्रन्थ में संस्कृत जगत् के महान् कथाकाव्यकार धनपाल प्रणीत तिलकमञ्जरी का कवि ने समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

संस्कृत साहित्य में राष्ट्रिय भावना (डी० लिट्० शोधग्रन्थ)– डॉ० दीक्षित रचित यह ग्रंथ राष्ट्रीयभावना से ओत–प्रोत है। इस ग्रन्थ में कवि ने अपनी राष्ट्रिय भावना तथा देश–प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए, संस्कृत साहित्य में प्राप्त राष्ट्रभक्त, पराक्रमी एवं बालिदानी शूरवीरों की शौर्यपूर्ण कथाओं को रोमांचक शैली में वर्णित किया है तथा इस ग्रन्थ में भारतवर्ष के प्राचीन तथा अर्वाचीन का परिशीलन करते हुए आने वाले समय के प्रति आशापूर्ण परिकल्पनाएं प्रस्तुत की गयी हैं।

शोधलेखावली– डॉ० दीक्षित ने अपनी साहित्यिक साधना में अनेक पत्र–पत्रिकाओं तथा संगोष्ठियों में अनेक शोधपत्र लिखे हैं, जिनका संकलन इस ग्रन्थ में किया गया है।

XIII. अन्य ग्रंथ

संस्कृतानुवादकालिका– यह डॉ० दीक्षित की पहली रचना है। इसमें विद्यार्थियों के लिये संस्कृत भाषानुवाद की विधियों का सरल एवं छात्रानुकूल पद्धति में वर्णन किया गया है।

गद्यकाव्यसमीक्षा– डॉ० हरिनारायण दीक्षित ने इस रचना में गद्यकाव्य की अनेकानेक विशेषताओं जैसे– शैली, रीति, तथा आलंकारिकता आदि विषयों का इस ग्रन्थ में सविस्तार वर्णन किया है। जिज्ञासु पाठकों तथा शोधार्थियों के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है।

XIV. निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि डॉ० दीक्षित संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य कवि हैं। आपने अपने विपुल साहित्य साधना द्वारा मानव मात्र को अपने सत्कर्मों को करते हुये प्राणिमात्र के प्रति दया, न्याय, परोपकार, विश्वबन्धुत्व, राष्ट्रीय एकता, प्रकृति संरक्षण एवं आदर्श समाज की स्थापना के लिये सन्देश देते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. संस्कृत–वाङ्मय का बृहद् इतिहास {सप्तम–खण्ड आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास} (उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ; द्वितीय संस्करण–2017)
2. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, श्रीहनुमद्दूतम् (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–1987)
3. डॉ० हरिनारायण दीक्षित भीष्मचरितम्, (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–1991)
4. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, भारतमाता ब्रूते, (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चंद्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–2003)

5. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, श्रीग्वल्लदेवचरितम्, (ईस्टर्न बुक लिकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–2008)
6. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, श्रीराधाचरितम्, (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–2005)
7. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, शोधलेखावली– (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–1988)
8. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, उपदेशशती (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–1993)
9. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, मेनकाविश्वामित्रम् (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–1984)
10. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, निर्वेदनिर्झरिणी (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–2009)
11. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, संस्कृतनिबन्धावली– (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–1985)
12. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, गोपालबन्धुः – (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–1988)
13. डॉ० हरिनारायण दीक्षित, गद्यकाव्यसमीक्षा – (ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली; प्रथम संस्करण–1989)
14. डॉ० लज्जा पंत, महाकवि डॉ० हरिनारायण दीक्षित की कविताओं का सांस्कृतिक विश्लेषण – (राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली; प्रथम संस्करण–2021)
15. अन्तर्जालीय स्रोत– उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ sansktritividwan.com/